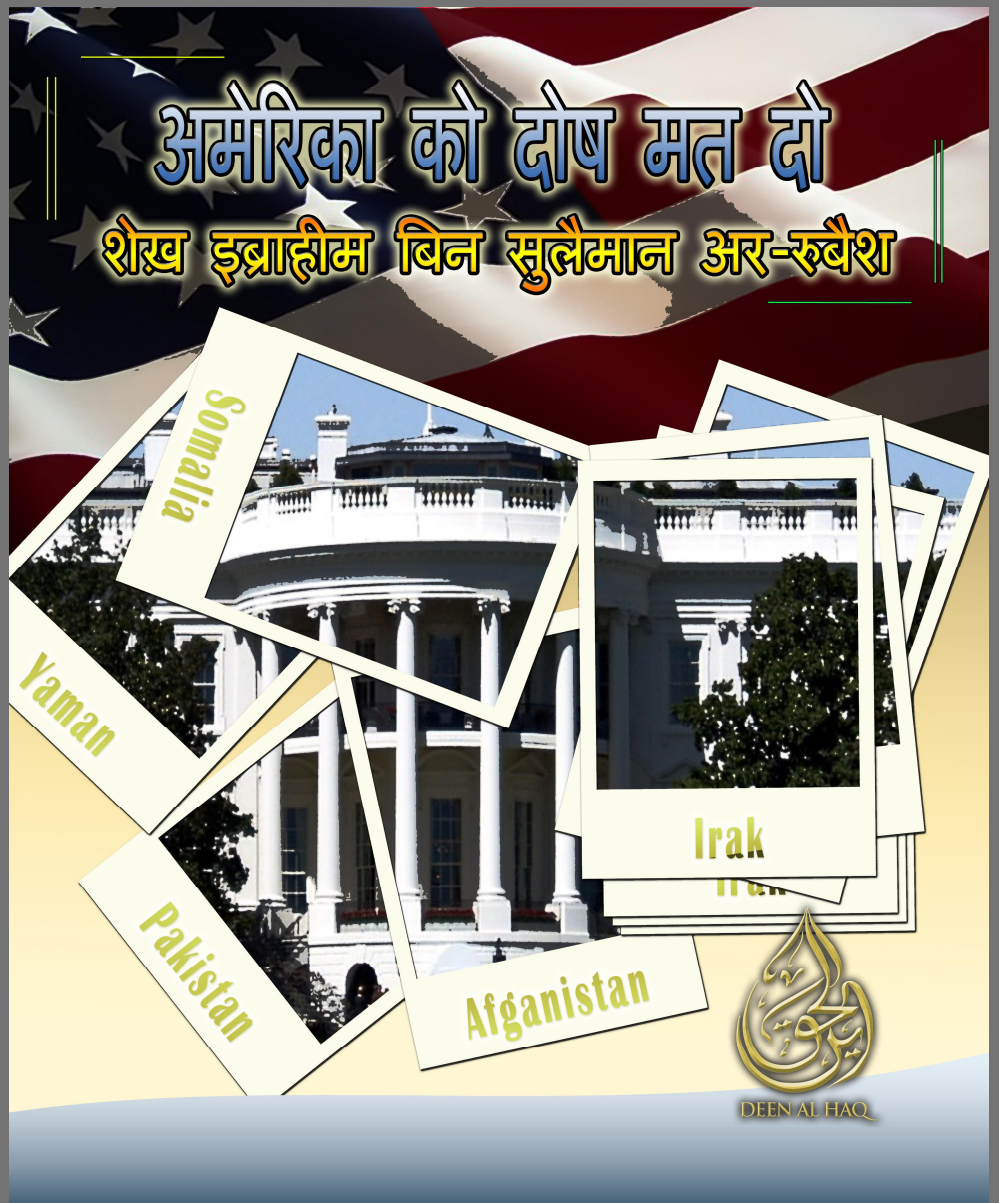


अमेरिका को दोष मत दो

माननीय शेख इब्राहीम अर-रुबैश



दीन-अल-हक्क मीडिया

मुजाहिदीन-ए-खुरासान



अमेरिका को दोष मत दो

शेख इब्राहीम बिन सुलैमान अर-रुबैश

अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा कृपाशील अत्यन्त दयावान है***

बेशक सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं, उस से सहायता मांगते हैं, उसकी मग़्फ़िरत चाहते हैं, तथा हम अल्लाह की शरण लेते हैं अपने नफ़्सों की बुराई से तथा अपने बुरे कार्यों से, जिसे अल्लाह मार्गदर्शन दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई मार्गदर्शन नहीं दे सकता, तथा हम गवाही देते हैं कि अल्लाह के बिना कोई ईश्वर नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं तथा हम गवाही देते हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम उसके बंदे और दूत हैं; अल्लाह की दया तथा आशीर्वाद हो उन पर, उनकी संतान पर, उनके साथियों पर तथा उन पर जो भलाई के साथ उनकी पैरवी करें, बदले के दिन तक ।

हे अल्लाह ! तेरी प्रशंसा है जब तक तू प्रसन्न हो जाए तथा तेरा धन्यवाद है कि तू ने हमें इस्लाम की ओर मार्गदर्शन दिया तथा हमें बेहतरीन उम्मत में पैदा किया जिसे तू ने मानवता के लिए बनाया, तथा तू ने अपनी सब से अच्छी पुस्तक उतारी तथा हमारी ओर अपने सब से अच्छे दूत को भेजा तथा उसे एक न समाप्त होने वाला चमत्कार दे दिया, जो सत्य के प्रत्येक इच्छुक का मार्गदर्शन करता है तथा जो इस से मुंह मोड़े उसके लिए कोई मार्गदर्शन नहीं है {अल्लाह जिसे चाहता है अपनी रोशनी की ओर मार्गदर्शन करता है; सूरह अन-नूर ३५}, जबकि कुफ़्फ़ार अपने भटकावे तथा आनाकानी में हैं तथा जैसे जैसे समय बीत रहा है वह सत्य से ओर दूर होते जाते हैं ।

कुफ़्फ़ार की शत्रुता एक ऐसा मामला है जिसे कोई एकेश्वरवादी भाई नहीं नकारता,

तथा यह शत्रुता एसी है जो इनके हृदय में आग की तरह जल रही है, वे इसे छुपाने का प्रयास करते हैं परंतु इस में से कुछ उनकी जुबानों पर प्रकट हो जाती है और जो छुपी है वह स्पष्ट से बड़ कर है; {गंभीर घृणा पहले ही उनके मुँहों से स्पष्ट हो चुकी है तथा जो उनके सीने छुपाते हैं इस से बड़ कर है; सूरह आल-ए-इमरान ११८}; वह हमारे लिए भलाई से नफ़रत करते हैं यद्यपि केवल अल्लाह की कृपा से हो; {अहल-ए-किताब में से जो लोग इनकार करते हैं तथा मुश्रिकीन, इस बात को पसंद नहीं करते हैं की तुम पर तुम्हारे प्रभु की ओर से भलाई उतरे; सूरह अल-ब-क-रह १०५} । उनको पसंद है कि हमें हानि हो {उन्हें पसंद है वह जिस से तुम्हें कष्ट पहुंचे; सूरह आल-ए-इमरान ११८} । वह चाहते हैं की हम उनके प्रकार काफिर हो जाएँ {वह इच्छा करते हैं कि तुम इनकार करो जिस प्रकार उन्होंने ने इनकार किया है, ताकि तुम {सब} एक जैसे हो जाओ; सूरह अन-निसा ८९}; {अहल-ए-किताब में से बहुत से लोग यह चाहते हैं कि वे तुमको ईमान के पश्चात वापस कुफ़्र की ओर लोटा दें, उनकी ईर्ष्या के कारन; सूरह अल-ब-क-रह १०९} ।

उनकी शत्रुता की प्रमुख विशेषताओं में है कि वह हमारे वीरुध लड़ते हैं, अल्लाह फर्माता है : {तथा तुम से लड़ना नहीं छोड़ेंगे जब तक न वह तुम्हें तुम्हारे दीन से फ़ेर दें; सूरह अल-ब-क-रह २१७} । हमारे वीरुध उनकी लड़ाई अच्छा प्रमाण है कि हम अभी भी अपने दीन पर हैं, इतिहास ने इस आयत को सहीह साबित किया है । हमने पाया कि कुफ़्रार अहल-ए-ईमान के साथ रिश्ते ओर वादे के प्रतिबंधों को कोई महत्व नहीं देते तथा हम ने यह भी पाया कि वह आपस में एक दूसरे के शत्रु हैं, परंतु अहल-ए-ईमान के वीरुध संयुक्त हो कर अपनी आपस की शत्रुता को भूल जाते हैं ।

{अरबी कविता} : वह बिखरे हुए हैं सिवाय हमारे वीरुध - - तो हम भेड़ियों के

शिकार बन जाते हैं

हम ने पाया कि उन में कुछ अगर स्वयं न लड़ें तो लड़ाई में सहायता करेंगे । इस्लामी इतिहास में कोई ऐसी अवधि नहीं है जो लड़ाई के बगैर हो; ऐसा इस लिए है कि अगर इस्लाम की उम्मत एकेश्वरवाद को नहीं फैला रही थी तो स्वयं अत्याचार तथा अपमान का शिकार हो रही थी । अगर्चि हमारी अधिकतर जंगे ईसाइयों, क्रूस के पुजारियों के साथ हुवी हैं, परंतु दूसरे धर्मों ने भी बारी बारी इस्लाम के वीरुध रोमांच में भाग लिया है, तथा एक दूसरे को इस कार्य पर उभारा है, तो जिसने प्रयास किया या असफल रहा तो कुफ़्र में उसका भाई उसका स्थान लेता है ओर उसका चरित्र निभाता है । इस्लाम के वीरुध सब से गंभीर लड़ाइयाँ पिछली शताब्दी में देखी गई, कियोंकि कुफ़्र के देश एकजुट हो गए हैं ओर वह लगातार जंग कर रहे हैं ।

जिस बात ने इस घटना को गंभीर बना दिया यह है कि मुसल्मानों के पास कोई अस्तित्व नहीं जो उन्हें संयुक्त करे या कोई रक्षक नहीं जो उनकी रक्षा करे । ओर जिस बात ने इस आपदा को ओर गंभीर कर दिया यह है कि मुसल्मानों के शासक ने ही उनके वीरुध उनके शत्रुओं को शक्ति दी, अर्थात् भेड़िये को भेड़ें चराने पर नियुक्त किया गया, इसके परिणाम के रूप में भेड़ें गुम हो गई कियोंकि कोई गड़रिया नहीं था; मुसल्मान संप्रदायों तथा दलों में बट गए पहले से अधिक तथा वह आपस में ही व्यस्त होगये, इस प्रकार उनके शत्रु केलिए सहल होगया कियोंकि उसका दर्शक बन कर देख लेना ही पर्याप्त था ।

अगर हम इस शताब्दी में इस्लाम के वीरुध उठाए जाने वाले परचमों की बात करेंगे तो इन में सब से अधिक प्रमुख, अल्लाह तथा उसके दूत का शत्रु, पापी तथा

अत्याचारी अमेरिका है । हमारे समय का हुबल, इस काल का बुत जिसने अपनी शक्ति से हर एक को डरा के रख दिया । तो अमेरिका का लाठी गुमाना था कि जिस के हृदय में अल्लाह का भय कम है वह इसके प्रचार में लग गया, अपनी इच्छा से या भय के कारन; तो वह अपनी सेनाएँ भेज कर तथा अपने क्षेत्र उनके लिए खोल कर उनके आज्ञाकारी हो गए; उन्होंने ने इस लक्ष्य के लिए अपने कलम का प्रयोग किया तो वह फुत्वों को उलटते हैं तथा उनके लिए सत्य को असत्य तथा असत्य को सत्य बना देते हैं । वह दीन को बिगाड़ देते हैं तथा इसको सस्ती संसारिक प्रसिद्धि के लिए बेच डालते हैं, फिर दीन भी बेकार जाता है तथा संसार भी शेष नहीं रहती । ***

अमेरिका ने पिछले ६० वर्ष से अधिक समय से फिलिस्तीन में हमारी जन्ता की मार धाड़, उन पर गोलाबारी, उनको भयभीत करने तथा उन्हें बेघर करने की निगरानी की । इस ने कसाई को प्रोत्साहित किया तथा उसे चाकू तेज़ कर के दिए । इस ने इस प्रकार उसकी सुरक्षा की जिस प्रकार मनुष्य अपने बिगड़े हुए बेटे की करता है । अमेरिका ने हमारे इस्लामी विश्व पर अपना शिकंजा कस लिया तथा इसको अपनी इच्छा के अनुसार चला रहा है । इसने अपने दास, गद्दारों को शासक बना रखा है ताकि इसकी इच्छा पूरी करते रहें, इसकी नीतियों पर काम करते रहें, मुसलमानों के संसाधनों से जो यह चाहे इसे देते रहें तथा उनके साथ लड़ते रहें जो अमेरिका के वीरुध विद्रोह करें । अगर किसी के दिमाग में यह बात आए कि अमेरिकी गोदाम से बाहर निकल आये तो उसे तीन में से एक मामले को चुनना होगा : मृत्यु, कैद या हिज्रत, तथा इनके इलावह भयानक मीडिया अभियान के माध्यम से बदनामी । इसी कारन इनके जेल, इस्लामी-पच्छिम, मिस्र, अश्-शाम या अरब प्रायद्वीप में, अल्लाह के नेक बंदों से भरे पड़े हैं ।

जब तालिबन सरकार ने इस विश्व प्रणाली के वीरुध विद्रोह कर दिया तथा हमारे समय के तागूत के प्रति कुफ़र कर दिया तो उसने इसकी नाकाबंदी सख्त कर दी तथा इसे दबा लिया । यह तो अल्लाह की इच्छा थी कि इस्लाम के बहुत से शेरों ने शेख उसामा बिन लादिन की आज्ञा ओर निर्देश पर इसका सामना किया तथा इसके बीतर इस पर वार किया, अमेरिकी आदर का अपमान किया तथा इसकी नाक को गंदगी में रगड़ दिया । कुफ़र पागल हो गए कियोंकि उन्हें आदत नहीं थी कि किसी को साहस हो ऐसा कुछ करने का, तो उन्होंने ने अपने सेनानियों को जुटाया, अपनी शक्तियों को इकट्ठा किया तथा उनके मूर्ख ने कैसर का पालन करते हुए इसे एक सलीबी युद्ध बताया तथा विश्व को दो भागों में बांटने की आवाज़ दी, या तो इसके साथ या इस्लाम के साथ । इस ने अफ़गानिस्तान पर भारी गोलाबारी की, एक ऐसे व्यक्ति की गोलाबारी जो मूमिन के संबंधों की परवाह नहीं करता तथा न ही वादे की । इस में आश्चर्य की कोई बात नहीं कियोंकि जिन का कार्य गलत है वही सज़ा से बचे हुए हैं । तालिबन सरकार का तख़्ता उलट दिया गया तथा मुजाहिदीन या तो मर गए या बंदी बनाए गए या फिर बेघर कर दिये गए । मीडिया में बहुत से पाखंडियों ने चिल्लाया कि **इनके धर्म ने इन्हें धोका दिया है**, तथा उन्होंने ने सोचा कि अमेरिका की अनुमति के बिना इस्लाम कभी भी खड़ा नहीं हो सकता ।

काफिर विजय के स्वाद से धोका खा गया, इसने अफ़गानिस्तान के साथ इराक को भी मिला दिया तथा इसने उस प्रभु के साथ भी विद्रोह किया जिसकी पूजा वह अल्लाह को छोड़ के कर रहा है । तो इसने मनुष्य के बनाए हुए क़ानूनों तथा अंतर-राष्ट्रीय समझौतों का विरोध किया ओर क्यूबा,अबु-गराईब तथा दुस्रे गुसजेल बनाए, जहां जानकारी उगलवाने के भीषण हथकंडों का प्रयोग करके, पवित्र क़ूरआन की तौहीन करके, इस्लाम का मज़ाक उड़ा कर, महान पैगम्बर का अनादर करके,

तथा मनुष्य की महानता का अपमान करके, मानव-अधिकारों - - अगर वह दूसरों को मानव समझते हैं तो - - का खुल्लम-खुल्ला मज़ाक उड़ाया जाता है । ***
इनके नवीनतम अपराधों में, जो इनकी पराजय की सूचना है, इनकी वह वीडियो है, जिसमें मुसलमानों की भावनाओं तथा इस्लाम की शहादत के एक भाग का मज़ाक उड़ाते हुए रसूल-ए-अक्रमसल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम का अपमान किया गया है । हे अल्लाह ! तू मुहम्मद पर तथा उनकी संतान पर अपनी दया तथा आशीर्वाद उतार उसी प्रकार जिस प्रकार तू ने इब्राहीम तथा उनकी संतान पर उतारीं, निस्संदेह तू ही सारी प्रशंसा के योग्य है तथा बुजुर्गी वाला है ।

हम नहीं जानते कि अमेरिका किस सीमा पर मुसलमानों के वीरुध अपने अपराध को रोकने का संकल्प रखता है तथा अत्याचार की किस सतह पर अमेरिका को तुष्टि होगी । परंतु इस सारे अत्याचार तथा अन्याय के साथ मैं कहता हों कि : अमेरिका को दोष मत दो, न इस पर अधिक बोझ डालो; इसको दोष मत दो बल्कि अपने आप को दोष दो; हम ने स्वयं अपने ऊपर यह लाद दिया तथा जो कांटे बोता है, वह हानितथाघाव उठाता ही है ।

जो अमेरिका ने किया उसके लिए बुद्धिमत्ता का कार्य था जो उसके स्थान पर बैठा हो; क्योंकि उसने ऐसे लोग पाए जिन पर यह जितना भी चढ़ दोड़े, वह इतना ही उसके निष्ठावान हो जाते हैं, कुछ व्यक्तियों के बिना । उसने फिलिस्तीन में हमारे भाइयों को वध किया तो मुसलमान केवल तमाशा देखते रहे । सब से अच्छे वह हैं जो मिनबरां पर चिल्लाते हैं तथा अगर वह मस्जिदों के द्वारों पर कुछ दान करें तो यह समझते हैं कि उन्होंने ने वह सब से अच्छा कार्य किया जो वह कर सकते थे । शासकों ने अमेरिका को सजदा किया तथा अपनी मित्रता तथा शत्रुता इसके लिए

स्मर्पित कर दी परंतु उन्हें वह लोग मिले जो इन्हें जायज़ शासक मानते हैं तथा इनके विरोध से मना करते हैं । ***

हम अमेरिका के कार्यों पर आश्चर्य क्यों करते हैं जबकि इस्लामी गूटों के व्यक्ति उनको निमंत्रण देते हैं कि मुसल्मानों के देशों पर कब्ज़ा करके अल-काइदह का समापन कर दें । तथा दूसरा कहता है कि **अल्लाह का धन्यवाद है कि अमेरिका हम से प्रसन्न है** तथा बहुत से अमेरिका को प्रसन्न करने के लिए कार्य करने में पहल करते हैं । ***

अमेरिका सीधे कब्ज़े की घोषणा करते हुए मुसल्मानों के देशों में आया, अपने व्यक्तियों में से एक को मुसल्मानों के देश का शासक स्थापित किया, तथा उसने इसे इस प्रकार से पुरस्कार दिया कि एक ऐसे व्यक्ति ने जिसे मुसल्मानों के विद्वान के तौर पेश किया गया, यह घोषणा की कि अमेरिका ने जिस शासक को नियुक्त किया वह एक वैध शासक है, उसकी आज्ञा के बिना जिहाद करना नाजायज़ है तथा जिस ने उसकी आज्ञा के बिना लड़ा तो उसके परचम की कोई उचित अवस्थिति नहीं है । ***

अमेरिका का यह अधिकार बन्ता है कि वह इस्लामी शैहरों पर अपने कब्ज़े को विस्तार दे तथा अपने अत्याचार को बढ़ाये जब मुसल्मानों के मुफ्तीयों ने उसके वीरुध जिहाद को उत्पीड़न घोषित किया जहां योद्धा को यह मालूम नहीं कि उसने कियों मारा ओर न मारे जाने वाले को मालूम है कि वह कियों कत्ल हुआ; तथा इन सब में अच्छा वह है जिसे अपने जिहाद की विशुद्धता के लिए अमेरिका की अनुमति की आवश्यकता है । ***

अमेरिका के मुसल्मान देशों पर कब्ज़ा करने के कारणों में कुछ प्रचारकों के इस्लामी न्यायशास्त्र को स्थानीय बनाने के प्रयास भी हैं, ताकि इसे अमेरिकी नीति के अनुसार किया जाए । तो उन्होंने ने रक्षात्मक जिहाद के लिए ऐसी शर्तें आवश्यक

बना लीं जिन में सब से महत्वपूर्ण अमेरिका के एजेंट की अनुमति है। इस से पहले उन्होंने ने आक्रामक जिहाद को रद्द किया था तथा इसे एक अपमान के तोर देखते थे जिस से इस्लाम को बरी कर देने की आवश्यकता है। उनकी स्थिति यह हो गयी कि जैसे इस कहावत से अलग हो रहे हों, जिसे अतीत-काल में मुसल्मान याद रखते थे : **हम वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने भेजा है ताकि मानवता को बंदों की पूजा से निकाल कर अल्लाह की पूजा में डाल दें।** वह यह कहते हुए शर्म महसूस करने लगे कि मुसल्मान सैना को उन पर आक्रमण करने की आवश्यकता है जो निमंत्रण का विरोध करें, तथा उनके पुर्षों को मार डालने की तथा उनकी महिलाओं को गुलाम बनाने की; वह इस से भी शर्म महसूस करने लगे जैसे वह यह न जानते हों कि इसे अल्लाह के दूतसल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम ने अंजाम दिया।

अमेरिका को कैसे दोष दिया जा सकता है जबकि कई मुसल्मान प्रचारक ईसाइयों के कत्ल की निंदा करने में पहल करते हैं, हालांकि जब मुसल्मान मारे जाते हैं तो उनके चेहरों पर अप्रसन्नता प्रकट नहीं होती तथा कोई आवाज नहीं उठती। तुम हैरान हो सकते हो कि म्यांमार में जब मुसल्मानों का भीषणनरसंहार होता है तो यह चुप रहते हैं और जब अमेरिकी राजदूत को कत्ल किया गया तो उन्होंने ने आलोचना की घोषणा करने में पहल की, तथा जब अमेरिका में समुद्री-तूफान आया तो उन्होंने ने लोगों को अमेरिका को पेश आने वाली दुर्घटना पर प्रसन्न होने से मना किर दिया। मैं आप से पूछता हों कि इन लोगों की निष्ठाकिस के प्रति है?***

हम पर अमेरिका कैसे आक्रमण न करे हालांकि हमारे बीच झुकने वाले प्रचारक हैं जिन्होंने ने नस्लें तैयार की एसों की कि जब उन में से किसी को कहा गया कि :

अगर अमेरिकी तुम्हारे घर में प्रवेश करेगा ताकि तुम्हारे आदर का उल्लंघन करे , तो तुम क्या करोगे ?", उस ने कहा : मैं सब करूंगा तथा इसके इनाम की आशा अल्लाह से रखों गा ।

तथा दूसरा कहता है : अगर कोई राफिज़ी मुझ पर शासक होगा तो हित इसी में है कि उसकी मानी जाए । तथा फिर कहता है कि : अगर शासक {किसी लड़ाई में} विजयी होता है तो उसके वीरुध विद्रोह अवैध है , अगरचि वह काफिर हो । तथा उसका भाईइराक़ में अपने भाइयों को सलाह देता है कि अमेरिका के वीरुध न लड़ें बिना इसके कि वह घरों तथा मस्जिदों पर आक्रमण करें । यह मूर्खइन लोगों को देखते हैं जो खुल कर पाप करते हैं तो उनको नहीं टोकते ओर फिर यह देखते हैं कि उन पर यह ज़िम्मेदारी है कि उन लोगों के पास जाएँ जो मुसल्मानों की सहायता करते हैं , फिर उन से पश्चाताप करने को कहें तथा उन पर स्पष्ट करें कि सही पश्चाताप यही है कि पूछताछ करने वालों को वह सारी जानकारी दे दें जो इनके पास है ।

ऐसा कियों न हो जबकि प्रतिशिठ्त्त प्रचारक इस्लामी देशों की राजनीतिक बाँट से प्रभावित हुए तथा घोषणा करने लगे कि दूसरे देशों में मुसल्मानों की सहायता करना अवैध है क्योंकि सीमाओं ने उन को अलग कर दिया है ।

एक दूसरा कहता है कि अपने भाइयों के दुख में शामिल होना ऐसे है कि इस में व्यस्त हुआ जाए जिस से उस का कोई लेना-देना नहीं है ।

फिर तीसरा कहता कि पथभ्रष्ट समुदाय की निशानी यह है कि जब इनके आगे मुसल्मानों की दुर्घटनाओं की चर्चा की जाए तो वह प्रभावित होता है ।

अमेरिका हम से कियों नफ़रत न करे जब वह हमें देखते हैं कि उन से शत्रुता रखते हैं जो इन से शत्रुता रखते हैं, उन्हें बुरे उपनामों से पुकारते हैं, फुत्वों में उन्हें खारिजी करार देते हैं, इन से मुकरते हैं तथा उनकी मृत्यु पर प्रसन्नता प्रकट करते हैं, यहाँ तक कि मुफ्तीयोंमें से एक ने कहा कि उनकी जासूसी करना फर्ज़ है तथा उन से लड़ना जिहाद है ।

***अगर

कोई व्यक्ति जिहाद का मार्ग अपना लेता है तो वह उसकी ओर लपकते हैं उस पर तरस खाने के दावे के साथ , तथा अगर उन्हें यह मालूम पड़ जाए की मुस्लिम जन्ता के प्रति विद्रोह करते हुए बंधकों के साथ बदकारों तथा शराबाइयों से भी बुरा व्यवहार किया जाए गा । फिर वह किराये पर लिए गए दाड़ी-वाले अपना चरित्र निभाने केलिए भाग लेते हैं, तो उनमें से एक समूह उनको स्थिति के प्रति सलाह देने केलिए उनके पास जाता है जबकि दूसरा समूह मिंबरों पर उनको धमकियाँ देता है । तथा एक न्यायदीश उन्हें पश्चाताप करनेको कहता है ओर निर्णय सुनाता है यह दावा करते हुए कि उसका निर्णय अल्लाह की शरीअत के अनुसार है । जिहादी व्यक्तियों मेंसे अगर कोई जिस ने उम्मत के सम्मान केलिए विद्रोह किया था, मारा जाए तो कुछ उसकी मृत्यु केलिए प्रसन्नता की घोषना करने में पहल करतेहैं, यहाँ तक कि अगर ऐसा अमेरिकियों के हाथों हुआ हो, तथा अज़-जर्कावी ओर बिन-लादिन अल्लाह उन पर दया करे, की मृत्यु के समाचार पर प्रतिक्रिया : नेक कार्य करने वाले जिन्हों ने उम्मत केलिए अपने जीव भालिदान दिये, क्या इस प्रकार उन्हें इनाम दिया जाता है ? कैसे दया के योग्य लोग हैं जिन्हें अपमान में जीने की आदत पड़ गयी है, अगर उन्हें आदर से जीने को कहा जाए तो उन्हें स्वीकार न होगा । लानत है ऐसे लोगों पर जो गुलामी के इतने आदी होगए यहाँ तक कि वह स्वतन्त्रता से तंग आगए अगरचि दूसरे लोग इसे तलाश करते हों ।

अमेरिका हमपर आक्रमण कियों न करे जबकि वह हमारे विद्वानों को देखता है कि उन्होंने ने इसकी सुरक्षा तथा संतोष केलिए ऐसे कारन बनाए हैं जिनकी यह कल्पना नहीं कर सकता । एक ने इनके खून को तथाकथित अहद के बहाने से आदरणीय कर लिया ओर दूसरा इनके एजंटों के खून को आदरणीय कहता है । **अमेरिका ने जिस सैनिक को किराए पर लिया, उसको कत्ल करना वैध नहीं है कियोंकि वह निमाज पड़ता है** । तथा तीसरा इनके साथ लड़ने से मना करता है अगर इनके एजंटों ने इसकी अनुमति नहीं दी । यह हास्यास्पद बात है जो कब्जा करने वाले से कहते हैं कि अगर तुम मुसलमानों को वध करना चाहते हो तो ऐसा इसलामी शरीअत के अनुसार करो, तो तुम्हें यह कदम उठाने होंगे : शहरी कपड़े पहनो अगरचि तुम गठबंधन सेना में सब से ऊंचे कमांडर हो ओर हम तुम्हें इस बात की ज़मानत फराहम करेंगे कि हम उन्हें पृथ्वी से मिटा देंगे अगर वह तुम्हारे निकट आएँ तो । ऐसा इसलिए कि यह लोग शहरियों ओर सैनिकों में अंतर करते हैं, तो कुछ ऐसे मुसलमानों को लाओ जिनहें केवल उनके पेट ओर कुछ डालरों की चिन्ता हो, फिर उनको अपनी बारकों की सुरक्षा पर नियुक्त करो, फिर कोई भी तुम्हारे निकट आने का साहस नहीं कर सकता, कियोंकि वह तो मुसलमान है, तो क्या तुम एक मुसलमान को मारना चाहते हो ?" । अब इसके बाद तुम ओर क्या चाहते हो, मारो, वध करो, जानकारी प्राप्त करो, आवासीय इमारतों कोवेश्यालयों तथा शराबियों के बारों में बदल दो ओर अफ़गानिस्तान तथा इराक़ में अपनी काबिज़ सैनाओं को सैनिक तथा लाजिस्टिक सहायता दो, ओर मुहम्मद तथा अब्दुल्लाह नाम वाले {नाम बिना महत्व के} कुछ व्यक्तियों को लाओ, इनको अपने साथ रखो, इनका नौकरों की तरह प्रयोग करो, ओर तुम्हारे लिए महत्वपूर्ण है कि शांति के साथ अपना मिशन पूरा करो । यह दूसरा मामला है किसी इस्लामी देश पर कब्जा करने से पहले वहाँ कुछ शराबियों के साथ समझोता करो ताकि इस देश के

विलातुल-अम्न {वैध शासक} बनें । तुम ने करजई के साथ अच्छा किया तथा इराक में भी, तो जूही वह वलियुल-अम्न बने तो फिर तुम इसकी सुरक्षा तथा अहद में आगए हो । {अबू-बक्र नाजी की पुस्तक गद्दार से एक अंश के आजाद अनुवाद का अंत} । ***

एसा लगता हे की अमेरिकी हमें देखते हुवे हँसते हैं कि जब वह हमारी महिलाओं तथा बच्चों को मारते हैं तो हम कोई गतिविधि नहीं करते हैं, तथा हम में से कुछ अपराधों के बारे में बात करने को उत्पीड़न समझते हैं । जब मुजाहिदीन इनके एजेंटों को मारते हैं ओर उनके ओर हमारे बीच आड़े आ जाते हैं, तो इसकी टीवी चैनलों पर, मिंबरों पर तथा कौंसिलों में निंदा की जाती हे । हे मेरे प्रभू! अमेरिका एसे शत्रुओं से कितना प्रसन्न हे !

किस प्रकार अमेरिका हमें छोटा न समझे कि जब यह हमारे पैगम्बर का मजाक उड़ाता हे, इतिहास में अपमानों की श्रेणी में हमारी जो दृष्टि सुरक्षितहे, वह खामोशी तथा उनके मजाक की निंदा के बीच हे । दूतावास पर हमले के पश्चात उन में एक समूह ने मुसल्मानों के रक्तपात तथा इनके आदर के उल्लंघन का धीर प्रतिक्रिया के साथ गूंगे शैतान कि तरह तमाशा देखा, परंतु जब अमेरिकी राजदूत मारा गया, उस के हृदय में उत्साह उभर आया इस वास्तविकता की घोषणा करते हुए कि जिसने अहद के तहत कसी मुस्तामिन व्यक्ति को मार डाला, तो वह स्वर्ग की सुगन्ध नहीं सूंघे गा । एसा लगता हे कि इसे यह मालूम नहीं जो किसी मुसल्मान को पामाल करेगा, तो उसे अल्लाह पामाल करे गा । ***

कैसा निरादर हे कि एसे देश में जहां अमेरिकी लड़ाका विमान उड़ कर जिसको चाहे मार देते हैं बिना किसी सज़ा के, तथा जहां अमेरिका संसाधनों को लूटता हे, इसकी महिलाओं तथा बच्चों की हत्या करता हे - - - रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-

वसल्लम के समर्थन के लिए एक सम्मेलन का आयोजन किया जाता है तो भाषण देने वालों में से व्यक्ति उठता है और घोषणा करता है कि जिन्होंने ने दूतावास पर धावा बोल दिया वह मूर्ख तथा नीम-पागलों का समूह हैं, एक ऐसे समय जब बुद्धिमान जानते हैं कि अमेरिकी राजदूत ही वास्तव में देश का शासक है ।

एक गुट इतना बेशर्म था कि उसने घोषणा की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम का मजाक उड़ाने वाले की हत्या इस्लाम का अपमान है ।

यह ऐसे अपमान हैं जो किसी चट्टान पर लिख देने के योग्य हैं, तथा इन्हें अगली नस्लों को सिखाया जाना चाहिए ताकि हमारे सपुत्र गुलामी तथा झुकाव के आदी होने से बाज रहें । यह मजाकिया लेकिन हृदय को चीरने वाला मामला था कि कलम तथा जुबानें एक ऐसे काल में जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम का मजाक उड़ाया जाता है, अल्लाह तआला के फरमान को उद्धृत करते हैं कि {अल्लाह तुम्हें मना नहीं करता है उनका आदर करने से जिन्होंने तुम्हारे वीरुध तुम्हारे दीन के कारन युद्ध नहीं किया; सूरह अल-मुमतहनह ८} तथा उसका यह उपदेश कि : {ओर हम ने नहीं भेजा तुम्हें, बिना अपनी दयालुता बना कर संसार वालों के लिए; सूरह अल-अँबिया १०७}, बुराई को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम - - जिस पर मेरे माता पितावारे हों - - की दया के बेहतरीन पहलुओं के धारा दूर करने का निमंत्रण देते हुए, यह लोग भूल जाते हैं की वह मूमिनों पर अनुग्रह तथा उपकार करने वाले थे । अल्लाह फर्माता है कि : {वास्तव में तुम्हारी ओर तुम्हीं में से एक दूत आया है, उस पर तुम्हारा हानि में पड़ना असह्य है, तुम्हारी सफलता का वह उत्सुक है, मूमिनों के प्रति अत्यन्त करुणामय, दयावान है; सूरह अत-तौबह १२८} । तथा अल्लाह फर्माता है : {इन में से कुछ लोग हैं जो

अपनी बातों से नबी को दुख देते हैं तथा कहते हैं : यह वह है जो हर उस बात को मान लेता है जो वह सुनता है; कह दो : वह तुम्हारी भलाई के लिए ऐसा है , अल्लाह पर ईमान रखता है तथा मूमिनों पर विश्वास करता है तथा तुम में से ईमान वालों के लिए सरासर दयालुता है; रहे वह लोग जो अल्लाह के रसूल को दुख देते हैं, इनके लिए दुखद यातना है; सूरह अत-तौबह ६१} ।

मैं ने इच्छा की कि नबी सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम के जीवन की कुछ घटनाएँ उजागर करों, यह दिखाने के लिए कि इन लोगों ने क्या कुछ अनदेखा किया । वे लोग इसलिए पथभ्रष्ट हो गए कियोंकि उन्होंने ने अपनी नज़र को उनके मार्गदर्शन की एक दिशा तक सीमित कर लिया तथा दूसरी ओर नहीं देखा । चूँकि वह हंसते योद्धा हैं, वह दया के दूत हैं तथा युद्ध के दूत । वह मिटाने वाले हैं जिन के धारा अल्लाह कुफ़र को मिटाता है । जिस ने उन से कहा : {तथा हम ने नहीं भेजा आपको सिवाय दयालुता बना कर संसारवालों के लिए}, उसने उन से यह भी कहा : {कुफ़्रार तथा मुनाफीकीन से जिहाद करो तथा उनके साथ सख्ती से पेश आओ; सूरह अत-तौबह ७३}; तथा उसी ने इसके पैरोकारों से यह कहा : {हे ईमान-वालो ! उन कुफ़्रार से लड़ो जो तुम्हारे निकट हैं तथा वह तुममें सख्ती पाएँ ; सूरह अत-तौबह १२३}; उसी ने यह भी कहा : {तथा उनको कत्ल करो जहां कहीं भी पाओ, तथा उनको निकालो जहां से उन्होंने ने तुम्हें निकाला : सूरह अल-ब-क-रह १९१}; उसी ने यह भी कहा : {तथा उनके वीरुध लड़ो जब तक उत्पीड़न समाप्त न हो जय, तथा दीन केवल अल्लाह के लिए न हो जाए; सूरह अल-ब-क-रह १९३} ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम ने अपने संदेश की विशेषताएँ स्पष्ट कीं तथा अपने निमंत्रण के मार्ग के संग-ए-मील को तथा इसके विरोधियों की स्थिति को

उजागर किया । उन्होंने ने फर्माया : {मुझे [अंतिम] घंटे से पहले तलवार के साथ भेजा गया, ताकि केवल अल्लाह की तपस्या की जाए । मेरा प्रावधान मेरे भाला के साये तले रखा गया, तथा अपमान और अनादर निर्धारित किया गया उसके लिए जो मेरी आज्ञा का विरोध करे । जो कोई कसी राष्ट्र का अनुकरण करेगा, तो वह उनही में से है; अहमद ने बयान किया} । क्या वह लोग इसे पहचानते हैं ?

इमाम अहमदने अब्दुल्लाह इब्न-ए-उमर रधि-अल्लाहु-अनहु से भी रिवायत किया : {कुरैशी अनेकेश्वर्वादी हिज्र में जमा होगए ओर कहा : हम ने कभी किसी व्यक्ति को सहन नहीं किया जिस प्रकार हम ने मुहम्मद को सहन किया --- इस ने हमारे बड़ों का मज़ाक उड़ाया, हमारे पूर्वजों पर लानत की, हमारे धर्म की निंदा की, हमारी बिरादरी को तोड़ा तथा हमारे भगवानों पर आक्रमण किया; बेशक हम एक संगीन मामले में इसके साथ सब्र से पेश आए । जब वह इसस्थिति में थे, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम चलते हुए रुक्न तक आए । फिर उन्होंने ने कअबे का तीन बार त्वाफ किया । जब वह उनके पास से गुज़रे तो उन्होंने ने इनके ही कुछ शब्द दोहरा कर इनका मज़ाक उड़ाना शुरू किया; मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम की ओरदेखा ओर आपके चेहरे पर क्रोध देख सकता था; ओर जब वह दूसरी बार उनके निकट से गुज़रे तो उन्होंने ने दोबारा इनका मज़ाक उड़ाया, ओर मैं ने फिर इनके चेहरे पर क्रोध देखा; फिर वह चल दिये; फिर तीसरी बार उनके पास से गुज़रे तो उन्होंने ने फिर इनका मज़ाक उड़ाया, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम ने उनको उत्तर दिया : हे कुरैश के समूह, सुन लो : उस ज़ात की सोगन्ध जिसके कब्जे में मुहम्मद कि जान है, मैं तुम्हारे पास आया हों, तुम्हें वध करने के लिए} । तो कहाँ हैं वह जो चाहते हैं कि हमउपहासका उत्तर शांतिपूर्ण निमंत्रण से दें ?***

बद्र के युद्ध में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम ने ७० अनेकेश्वरवादियों को कत्ल किया तथा ओर ७० को गिरिफ्तार कर लिया, फिर उन्होंने ने सहाबा से परामर्श किया । अबू-बक्र रधि-अल्लाहु-अनहु नेफिरौती लेने की सलाह दी, संभव है कि अल्लाह उन्हें इस्लाम की ओर मार्गदर्शन करे ओर उमर रधि-अल्लाहु-अनहु ने उनके सर उड़ाने की सलाह दी । तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम ने अबू बक्र रधि-अल्लाहु-अनहु की राय स्वीकार की । फिर अल्लाह ने यह कह कर फिरौती लेने पर सावधान किया : {यह किसी रसूल के लिए उचित नहीं कि उसके पास बंधक हों जब तक कि वह धरती में रक्तपात न करे; सूरह अनफाल ६७} । तो उनको खेद हुआ यहाँ तक कि वह रो पड़े ओर इच्छा करने लगे कि काश उन्होंने ने उनसे फिरौती लेने के बजाए उन्हें कत्ल किया होता ।

***बद्र के कैदियों में अन-नज़र इब्न-ए-हारिस भी था जब यह निर्णय लिया गया कि उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम को सख्त कष्ट देने के बदले कत्ल किया जाएगा । तो उसने मनाने का प्रयास करते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम से कहा : मुहम्मद , मेरे बच्चों का ध्यान कौन रखेगा ?" तो उन्होंने ने उत्तर दिया : {नर्ग की} आग।

बनू-कयनूका ने एक मुसलमान महिला को हिरासान किया, तो एक मुसल्मान पुर्षने उस सुनार की हत्या कर दी जिस ने ऐसा किया था, फिर यहूदियों ने उसकी हत्या कर दी । फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम ने उनका घेराव किया यहाँ तक कि वह उसके निर्णय पर सहमत हो गए । तो फिर उन्होंने ने इन्हें निकाल दिया जबकि अब्दुल्लाह इब्न-ए-उबय इस बात पर जोर देता रहा कि वह उन्हें क्षमा कर दें । क्या ही अच्छा सबक है ! दयालुता के दूत ने एक महिला को हिरासान किए जाने पर तथा एक व्यक्ति की हत्या पर युद्ध की घोषणा कर दी ।

क्या इन गद्दारों को यह बात समझ में आती है ? राष्ट्र धारत कर दिए गए तथा आदरों को पामाल किया गया परंतु इन लोगों में गतिविधि की कोई नियत देखने में न आई ।

एक समूह मदीना आया और इस्लाम सवीकार करने की घोषणा कि । वह मदीने के बुखार में पड़ गए, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम ने उनको आज्ञा दी कि ऊंटों के रक्षक के साथ बाहर चले जाएँ ताकि ऊंट का पेशाब तथा दूध पी सकें । परंतु जब वह स्वस्थ हो गए तो उन्होंने ने ऊंट-रक्षक की हत्या कर दी तथा ऊंट चोरी कर लिए । तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम ने उनके पीछे आदमी भेजे यहाँ तक कि वह पकड़े गए, फिर उन्होंने ने इनके बाजू और टांगें काट डालीं तथा गरम कीलों से उनकी आँखें तबाह कर डालीं कियोंकि उन्होंने रक्षक के साथ ऐसा ही किया था, फिर उनको छोड़ दिया यहाँ तक कि वह पानी मांगते हुए तथा इसके न मिलने से मर गए । इस प्रकार गद्दारों को सज़ा दी जाती है ।

जब बनू-नज़ीर ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लमकी हत्या करने का प्रयास किया, तो उन्होंने ने उनका घेराव किया तथा उनके खजूर के वृक्ष तबाह कर दिए और जला डाले यहाँ तक कि वह मदीने को छोड़ने पर सहमत हो गए और वह सारी संपत्तिलेजा सके जो ऊंटों पर लादी जा सकी, हथियारों के बिना । ***

जब खाई के युद्ध में बनू-कुरैज़ह ने धोका किया, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम ने मुसलमानों को जुटाया कि उनके वीरुध लड़ें तथा उनमें यह कह कर गतिविधि पैदा की : {तुम में से कोई अस न पड़े मगर बनू-कुरैज़हके हाँ}। फिर उन्होंने ने उनका घेराव किया यहाँ तक कि घेराव सख्त हो गया और वह सअद बिन मुआज रधि-अल्लाहु-अनहु के निर्णय पर सहमत हो गए । उसने निर्णय दिया

कि उनके पुर्षों को कत्ल किया जाएगा तथा उनकी महिलाएं ओर बच्चे गुलाम बनाएँ जाएंगे । वह अन्य रिवायतों में तकरीबन ६०० से अधिक पुर्ष थे जिनको कत्ल किया गया । ज़रा कल्पना करो अगर मुजाहिदीन ऐसा यहूदियों के साथ करें, तो ज्ञान का दावा करने वाले क्या कहेंगे ?

एक अंधा व्यक्ति था जिसकी एक बाँदी थी जो उस पर मेहरबान थी तथा उस से उसके दो लड़के थे । वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लमकी बदनामी करती थी । वह उसे मना करता था परंतु वह बाज़ न आई । एक दिन उस ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम का अपमान किया, तो उसने उसे मार डाला । ओर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम को इसका समाचार मिला तो उन्होंने ने कहा : {गवाह रहो कि उसके खून की कोई पवित्रता नहीं} ।

जब कअब बिन अल-अशरफ ने वह किया जो उसने किया, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम ने अपने सहाबा रधि-अल्लाहु-अनहुम से कहा : {तुम में कोन है कअब बिन अल-अशरफ केलिए कि उसने अल्लाह तथा उसके दूत को कष्ट दिया है ?}; फिर उन्होंने ने उसकी ओर मुहम्मद इब्न-ए-मस्लमह रधि-अल्लाहु-अनहु को एक समूह के साथ भेजा, जिस ने उसे बहलाया फुसलाया, यहाँ तक कि उन्होंने ने उसे कत्ल किया । इसके पश्चात इब्न-ए-अबी अल-हकीक की बारी आई ओर एक दस्ता भेजा गया ओर वह मारा गया जबकि वह अपने घर में अपने बच्चों के साथ सो रहा था ।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम को समाचार मिला कि एक कबीले ने ज़कात नहीं दी तो उन्होंने ने युद्ध की तैयारी की यहाँ तक कि कोई आया ओर उनसे

कहा कि कबीले ने ऐसा नहीं किया, फिर यह आयत उतरी : {है ईमान वालो, अगर कोई अवज्ञाकारी{फासिक} तुम्हारे पास कोई समाचार लेकर आता है,तो उसकी छानबीन कर लिया करो; सूरह अल-हुज्रात ६} ।

हुदैबियह-समझोते के समय, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम ने उस्मान इब्न-ए-अफ़फान रधि-अल्लाहु-अनहु को अनेकेश्वरवादियों की ओर भेजा, ओर अफवाहें फैलीं कि उस्मान की हत्या कर दी गयी, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम ने अपने सहाबा को शपथ {बयअत} के लिए पुकारा, फिर उन्होंने ने वृक्ष तले न भागने पर शपथ ली, इस संकल्प के साथ कि उस्मान की हत्या पर कुरैश से निमट लेंगे ।

ज़रा गौर करो, वह केवल एक व्यक्ति के लिए युद्ध करने के लिए जा रहा था, परंतु हमारे लोगों में से जो ज्ञान का दावा करते हैं, अगर उस दिन हाज़िर होते तो उन में कोई उठ के प्रचार करता : {बेहतर है कि एक मृत के साथ लोट जाएँ इस के बदले कि कई ओर मृतकों का कारन बनें}; वह यह समझते हैं कि विजय तथा पराजय मृतकों की संख्या के अनुसार होती है, मुसलमानों की स्थिति तथा उनके शत्रुओं के इनके प्रति भय की ओर ध्यान दिये बिना ।

मौता में भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लमने तीन हज़ार की एक सैना सहाबा में प्रमुख व्यक्तियों को खतरे में डाल कर, शाम के बाह्यक्षेत्र में भेजी - - - एक दूर दराज़ क्षेत्र,शक्तिशाली शत्रु, सहाबा में से ३ हज़ार को मिटाए जाने के खतरे में डाल देना - - - तथा इस सारे का कारन एक मुसलमान पुर्ष की हत्या थी, जिसका बदला रसूलुल्लाहसल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम लेना चाहते थे कियोंकि इसके वीरुध हमला सारे मुसलमानों के वीरुध हमला था । इस प्रकार एक व्यक्ति के लिए

एक युद्ध लड़ा गया । तो मुस्लिम का खून कितना बहा हालांकि हम में से कुछ दावा करते हैं कि हित इसमें है कि लड़ाई से बचा जाए । ***

जब मक्का पर कब्जा हुआ, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम को बताया गया कि इब्न-ए-खताल कअबे का गिलाफ थामे हुए है, तो उन्होंने ने कहा :

{उसको कतल करो}, क्योंकि उसने इस्लाम स्वीकार किया फिर मूर्तद होगया । इसके पास दो बांदियाँ थीं जो गा कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम के बुरे नाम निकालती थीं । ***

जब ताइफ के लोगों ने इनके वीरुध जंग की ओर अपने किलों में पनाह ली, तो उन्होंने ने उन पर घेरा डाला, उनके वीरुध मिनजिनीकें स्थापित कीं तथा उनके अंगूर तबाह करने की आज्ञा दी, फिर जब उन्होंने ने उसे अल्लाह तथा रिश्तेदारी का वास्ता दे कर छोड़ देने का अनुरोध किया, तो उन्हें छोड़ दिया ।

***रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम के प्रति कुछ रिवायते हैं, तो अगर तुम उसके उपदेश**{अपनी राह लो, तुम आज़ाद हो}** तथा **{मुझे दयालुता बना कर भेजा गया}** बयान करो ओर उसका उन लोगों को क्षमा करना जो उसको कतल करना चाहते थे, ओर उसका बीमार यहूदी की अयादत को जाना ओर अब्दुल्लाह इब्न-ए-उबय के दिये हुए कष्ट पर सब्र तथा मेहरबानी करना, ओर उसका उनको क्षमा करना जो उसका अपमान करते थे, तथा अगर तुम गरीबों तथा ज़रूरतमंदों के साथ उसकी नर्मी को बयान करोगे तथा नोकरों ओर अनाथों के साथ उसकी सहानुभूति, ओर उसका कम खाना ओर चटाई पर सोना, ओर अगर तुम बयान करोगे उसका कुफ़्रार को उपहार भेजना ओर उनके उपहार स्वीकार करना, ओर यह हदीस बयान करोगे : **{नहीं , मैं चाहता हों कि अल्लाह उनके बच्चों में से उसे पैदा करे जो एक अल्लाह की तपस्या करता हो}**, तो अगर तुम इसको बयान करोगे तो उन पहले बयान किए गए मामलों को भी बयान करो, क्योंकि वह सब

भी मुहम्मद सल्लल्लाहु-अलैहि-वसल्लम के मार्गदर्शन से है, जो सब से बेहतरीन मार्गदर्शन है । जिस ने यह कर्म किए उसी ने वह दूसरे कर्म भी किए, ओर यह सब सुन्नतें एक ही शरीअत से हैं । तो अगर कोई हम पर यह कह आर आलोचना करता है कि उसने अपने हाथ से केवल एक व्यक्ति को कत्ल किया तो हमारा उत्तर यह है कि उसने सैंकड़ों के कत्ल की आज्ञा दी तथा इसकी निगरानी की । वही है जिस ने कैदी बनाने पर रोया इस से पहले कि अनेकेश्वरवादियों को बड़ी संख्या में कत्ल करके प्रथ्वी पर रक्तपात किया जाता ।

आए हम पूरे दीन को लेलें ओर सब के सब आत्म-समर्पण करें । यह बात मार्गदर्शन से नहीं है कि वह हमें कत्ल करें, हमारे सम्मान को लूटें तथा हमारे दीन ओर पैगम्बरों का उपहास करें, फिर हम इस्लाम ओर उसके सहन को बयान करें ओर यह दोहराएँ : {ओर यदि वे शांति की ओर झुकें, तो तुम भी इसकी ओर झुक जाओ ओर अल्लाह पर विश्वास रखो; निस्संदेह, वह सब कुछ सुनता, जानता है ; सूरह अल-अनफाल ६१} । ***

सुबहाना रब्बिका रब्बिल इज्जति अम्मा यसिफून व सलामुन अलल मुर्सलीन वल-हमदु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन***

अल-मलाहिम मीडिया की ओर से प्रकाशित/प्रस्तुत

मुहर्रम १४३४ हिज्री , दिसम्बर २०१२ ई

हमें अपनी प्रार्थना में न भूलें

अंसारुलमुजाहिदीन फ़ोरम पर : आपके भाई

हमें अपनी प्रार्थना में न भूलिए



आपके भाई

दीन-अल-हक्क मीडिया

मुजाहिदीन-ए-खुरासान

आइए खुरासान के मुसल्मान विश्व जिहाद को जानें तथा विश्व के मुसल्मान खुरासान
के जिहाद को जानें